241

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

# Vidyawarta®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal
Issue-30, Vol-07 April to June 2019

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

MAH/MUL/03051/2012
ISSN:2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Publication | April To June 2019 Issue-30, Vol-07 | 01

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

# विद्यावार्ता™

**April To June 2019**
**Issue-30, Vol-07**

**Date of Publication**
**30 May 2019**

**Editor**
**Dr. Bapu g. Gholap**
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

*विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली*
*नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले*
*वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले*

**-महात्मा ज्योतीराव फुले**

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120.MH2013.PTC 251205
**Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

MAHMUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Publication
April To June 2019
Issue-30, Vol-07
248
07 244

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

13) [illegible]णा सबाने यांच्या कादंबरी लेखनातील स्त्रीविषयक जीवन जाणिवा
[illegible] करुणा व. डहाके, नागपूर. ||67

14) पेशवे कालीन सामाजिक चालीरितींचा अभ्यास : एक दृष्टीकोन
डॉ.दराडे संभाजी सोपानराव, अहमदनगर ||71

15) महाविद्यालयीन विद्यार्थी-विद्यार्थीनींच्या स्व-संकल्पनेचा तुलनात्मक अभ्यास
डॉ.एन.डी.मांगोरे, कोल्हापूर ||77

16) गोर बोलीतील होळीगीते : आकलन आणि आस्वाद
श्री. बंडू बन्सी राठोड ||79

17) कल्याणमधिल स्थानिक पत्रकारीतेचा इतिहास
प्रा. पद्मजा वेरणेकर, कल्याण (प) ||81

18) बाल काहानियों में पर्यावरण
चेतना मंजू, हल्द्वानी ||85

19) रामायण में वर्णित पर्वतों का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक अध्ययन
डॉ० श्याम प्रकाश & सत्य प्रकाश, लखनऊ ||88

20) समकालीन उपन्यास की यात्रा
दिवाकर विक्रम सिंह, झाँसी ||94

21) [redacted]
||96

22) तीसरा हिस्सा : एक पड़ताल है — मध्यवर्गीय व्यक्ति की
डॉ० पंकज सिंह, लखनऊ ||100

23) भूमण्डलीकरण और नारीवाद का बदलता स्वरूप : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
डा० प्रगति आनन्द, बिहार ||104

24) भारत में कुपोषण की विकराल स्थिति : समस्या और समाधान
डा० दीपशिखा, मधेपुरा ||108

25) बिहार के राजनीति में महिलाओं की भागीदारी : एक ऐतिहासिक अध्ययन
पूजा कुमारी, बिहार ||112

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com



PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI



# जखम हमारे उपन्यास में दलित संघर्ष

डॉ.सुधीर गणेशराव वाघ
हिन्दी विभागाध्यक्ष
शिवाजी महाविद्यालय,
हिंगोली

**********

महानायक डॉ. बाबासाहब आंबेडकर पर पहला उपन्यास लिखने वाले मोहनदास नैमिषराय की लगभग पचास कशतियां प्रकाशित हो चुकी है। उनकी रचनाओं में उपन्यास, कहानी, कविता, अनुवाद, आत्मकथा तथा कई विषिश्ट लेख षामिल है। लेखक ने अपने उपन्यास साहित्य में दलितों के जीवन पर आधारित कथाओं को प्रस्तुत किया है। नैमिषराय ने अपने साहित्य के माध्यम से दलितों के साथ हो रहे अन्याय, उनका षोशण दर्षाया है। नारी के साथ समाज में हो रहे अत्याचार एवम् कुप्रथाओं–अमानवीय व्यवहारों के बीच जूझाती, तडपती उनकी आहटों को भी दर्षाया है। मोहनदास नैमिषराय के उपन्यासों में मुक्ति पर्व–१९९९, वीरांगना झालकारी बाई, आज बाजार बन्द है, अपने अपने पिंजरे भाग–१,भाग–२ और जखम हमारे का समावेष होता है। मोहनदास नैमिषराय ख्यातनाम दलित साहित्यकार एवम् 'बयान' पत्रिका के संपादक है।

सन २०११ में प्रकाशित 'जखम हमारे' पहला उपन्यास है। नैमिषराय का 'जखम हमारे' उपन्यास एक अति संवेदनषील कथाकृति होने के साथ–साथ समकालीन इतिहास का एक मार्मिक दस्तावेज है। इसके माध्यम से लेखक ने गुजरात की उस महाविभीशिका का प्रभावषील चित्रण किया है जिसकी ज्वाला में हजारों जिन्दगियाँ झुलस गयी ।"[१]

हजारों सालों से ऐतिहासिक परिदृश्य में दलितों



PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

MAH MUL/03051/2012 ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Publication | April To June 2019 Issue-30, Vol-07 | 097

ने जो सामाजिक उत्पीड़न सहा है, विषमताएँ झेली है व भेदभाव ग्रस्त जीवन व्यतीत किया है, उन सबका चित्रण दलित उपन्यास कारों ने अपने उपन्यासों में किया है। गॉव में फैले इसी सामाजिक असमानता व भेदभाव को मोहनदास नैमिशराय ने जख्म हमारे उपन्यास में चित्रित किया है। ''गॉव में दलितो व सवर्णो की बस्तियॉ अलग—अलग थी। सुख—दुख में भी उनकी भागीदारी जातीय आधार पर ही थी।''[२]

प्रस्तुत उपन्यास में धर्मो और जातियों के बीच भेदों का अंकन हुआ है। भूकम्प से भगदड मच जाती है। भूकंप धर्मो और जातियों के बीच विभेद नहीं करता। सामाजिक और आर्थिक पन्नश्ठभूमि अलग—अलग होने से समाज के विभिन्न वर्ग अलग—अलग तरीके से प्रभावित होते है। धर्मो और जातियों के बीच भेद, वर्ग—विभेद की स्थिति भूकम्प राहत के कार्यक्रम में भी दिखाई पडती है। यहॉ पर भी दलित दलित ही रहता है। समाज का एक कुचला हुआ नायक जिसके साथ पषुओं की तरह सलूक किया जा सकता है। भूकम्प की मार से स्कूल, मंदिर और मस्जिदें भी बची नहीं थी। कुछ समय पहले तो लोग आराम से चैन की सॉस सो रहें थे और कुछ ही पल में भूकंप आया और गॉव के साथ षहर को भी दुर्घटनाग्रस्त करके चला गया। भूकंप के कारण तो कुछ लोग सुबह का सूरज भी देख नहीं पाये थे। जीवन का सबसे बडा कडवा सच उनके आसपास था। कल तक उनके पास सब कुछ था मगर आज कहने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं था। ''जीवित लोगों को षिविरों में लाया जा रहा था। घायलों का उपचार किया जा रहा था और मन्नतकों को अपने अपने रिती रिवाजों के अनुसार दफनाया जा रहा था। कुछ परिजन अपनों की तलाष में इन्ही षिविरों में आ रहे थे, कुछ की ऑखों में उम्मीदे थी तो कुछ ऑसुओं से भीगी ऑखे लेकर लौट रहें थे। भूकंप ने हजारों लोगों के जीवन को छीन लिया था।''[३] भूकम्प की मार से स्कूल, मंदिर और मस्जिदें भी बची नहीं थी। साभी वर्गो पर इसका प्रभाव दिखाई पडा।

इस उपन्यास में गुलाम अहमद एक दलीत पात्र है। भूकम्प के कारण गांव में कुछ बचा नहीं था। गांव छोडकर वह षहर में जीवन की खूषबू खोज रहा था। शहर में उसे कोई पहचानता नहीं था। भोजन की लाइन में आगे एक दलित व्यक्ति को खडा देखकर दूसरा सवर्ण आदमी क्रोधित होकर उस पर चिल्लाने लगा। इस परिस्थिति में भी उस इन्सान ने जाति की समझ को बांध के रखा था और उस दलित आदमी को दूसरी अलग से लाइन बना के खडे रहने के लिए बोल रहा था। किसी ने जब उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम गुलाम अहमद बताया। ''भूकंप में सब कुछ ध्वस्त हो गया था पर जाति नही।''[४]

कुछ समय पहले ही गुलाम अहमद इस गॉव में अपने परिवार के साथ आया था मगर अब उसके अलावा कोई जीवित बचा नहीं था। अपने परिवार के साथ आया था मगर अब उसके अलावा कोई जीवित बचा नहीं था। अपने परिवार की याद उसे बार—बार सताती रहती थी। उसकी ऑखों से पानी बहता ही रहता था। उसके नाम से साफ जाहिर होता था कि वो मुसलमान है, परंतु वो था तो एक हिन्दू ही। भूकंप ने बाकी लोगों के साथ—साथ गुलाम अहमद का भी सब कुछ छीन लिया था, कवेल बचा था तो उसका एक भतीजा। जिसकी खोज में वो अब षहर जाने के लिए तैयार हो गया था। उसके लिए षहर एक अजनबी व्दीप के समान था। षहर की चकाचौंध को राख करके गया हुआ भूकंप अब धीरे—धीरे षहर को सुधारने की स्थिति में था। गुलाम अब षहर की भीड में आ पहुँचा था परंतु षहर की गलियों, बस्तियों तथा बाजारों में घूमते हुए उसके भीतर तरह—तरह के सवाल उभर रहें थे। गुलाम को प्यास लगी थी मगर किसी की पहचान न होने के कारण वो उससे कुछ आषा भी नहीं कर सकता था। उसी समय उसकी नजर एक चप्पल सिलनेवाले आदमी पर पडी और गुलाम को लगा कि वो षायद उसकी मद्त करेगा। गुलाम ने उसके नजदीक जाकर कहॉ कि मैं दूर से आया हूँ और परेषान भी हूँ। यह बात सुनकर सुरजा ने उसे पहले पानी पिलाया फिर एसे सांत्वना देते हुए कहा कि वो उसकी जरूर मद्त करेगा। सुरजा ने उसे खाना भी खिलाया और गुलाम की दर्दभरी कहानी सुनकर उसे धीरज बंधाते हुए कहा कि जब तक उसे उसका भतीजा नहीं



PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli

मिलता तब तक वो उसके साथ ही रहे। सुरजा ने उसकी एक पहचान के हवलदार की मदद से उसे नौकरी दिलाने की लिए भी कहा था। सुरजा ने गुलाम को पुलिस चौकी में बिठाया ताकि हवलदार उसकी हालत देखकर उसे कोई अच्छी सी नौकरी दिला दे। मगर गॉव की तरह गुलाम को भी जाति के कारण वहॉ पर बहुत कुछ सुनाया जाता है। काफी कोषिष के बाद हवलदार ने उसे भूकंप से हुए आतंक में दबे हुए मुर्दो को बाहर निकालने का काम दिया था। इस बार भी थाने में से अन्य सिपाही ने गुलाम की हॅसी उडाते हुए कहा था कि –"गुलाम की नौकरी पक्की। तभी तीसरा भी बोला कि जितने मुर्दे ढोएगा उतना ही कमाएगा। उनकी जंबों से माल–पानी मिलेगा वो अलग।"[5] गुलाम को अब मलबे में से लाषे निकालकर उसे ठिकाने लगाने का काम मिला था। काम करते समय कभी–कभी गुलाम को अपने बीवी–बच्चों की याद आ जाती तो उसकी आंखे भर जाती थी।

लोगों के जीवन पर भूकम्प का असर कई दिनों तक रहा। भूकम्प के कारण उत्पन्न हुए समस्या को दूर करने के प्रयत्न होने लगे। भूकम्प की अस्तव्यस्तता के बाद अब षहर में जीवन धीरे–धीरे लौटने लगा था। बाजारों में भी रौनक बढने लगी थी। जो दुकाने टूट गयी थी उसें फिर से खडा कर दिया गया था। हर जगह साफ–सफाई हो रहीं थी। गलियां जो सुनसान हो गई थी वों फिर से अब बच्चों की आवाज से खिलने लगी थी। इन में से कुछ औरतों में से जिसने भी अपने सुहाग खोयें थे उनके चेहरों पर उदासी थी। उनकी आंखो से ऑसु कम नहीं हो रहे थे। लोग षहर को एक नई नजर से टकटकी लगाकर अब देखने लगे थे। जीवन अब धीरे–धीरे सुधरने लगा था। सब के जीवन में अब सूरज की तरह उजाला होने लगा था। मजदूरों के साथ–साथ गुलाम को संतोश था कि उसने अनेक जाने बचायी थी, परंतु एक बात पर वो हमेषा दुःखी हो जाता था कि अभी तक वो अपने भतीजे को ढूंढ नहीं पाया था। इसी चिंता में गुलाम एक दिन स्वयं मुर्दा हो गया था। गुलाम अपने भतीजे की जीते जी तो तलाष नहीं कर पाया था मगर जिस दिन गुलाम की असपताल में मन्नत्यु हुई उसी दिन उसके भतीजे राजू परमार को अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया था। हालाकिं उसके पांव मे अभी भी दर्द था। परंतु हॉस्पीटल में दूसरे मरीजों की संख्या बढने के कारण राजू को डिस्चार्ज कर दिया गया था। उसके पांव का जख्म अभी तक भरा भी नहीं था लेकिन उसे वैसी ही हालत मे वहॉ से निकाल दिया गया था। हवॉ से चलते–चलते वो रास्तें में जा ही रहा था कि वो अचानक बेहोष होकर गिर गया। रास्ते में आते–जाते लोग उसे देखकर नजरअंदाज कर रहे थे, तब ही उस भीड में से कए आदमी उसकी मद्द के लिए आगे आया। उसका नाम असलम था। वो राजू परमार को अपने एक दोस्त की मदद से उसकी रिक्षा में अपने घर ले गया। असलम ने और उसकी अम्मी ने बिना किसी जात–पात को देखे बिना राजू की खूब सेवा की। इतना ही नही असलम की अम्मी ने तों राजू को अपने बेटें के तरह खाना भी खिलाया। जब वो ठीक हो गया तो उसने वहॉ से जाने की अनुमति मांगी। असलम और राजू की अब दोस्ती हो गई थी और सब से बडी बात तो यह थी कि वो दोनों एक ही क्रातिकारी संघ में काम कर रहे थे। जिससे उन दोनों की दोस्ती और भी गहरी हो गई थी। राजू परमार, असलम और उनके साथ उनका एक और साथी मित्र था सुरेष जो उनके ही साथ काम करता था। ये सब दोस्त बनकर अपना अपना काम करने लगे। शहर के हालात धीरे धीरे सुधरने लगें थे। छुट मुट घटनाये हो रहीं थी। धीरे–धीरे सब ठीक होता जा रहा था। तभी माहोल बिगडता गया। कुछ जगह फिर से दंगे शुरु हो गये थे –"देष मे हत्याओं का दौर आरम्भ हो गया था। पहले दलित फिर ईसाई अब जैसे मुसलमानों की बारी थी। बजरंगी हो या षिव सैनिक वे चुन–चुन कर दलितों, ईसाई और मुसलमानों को मारने में लगे थे। गांधी के राज्य की परिस्थितियॉ तेजी के साथ बदलने लगी थी। हिन्दु पहले से अधिक आक्रमक होने लगे थे। उनके भीतर तरह–तरह की विकृतियॉ रेंगने लगी थी। उनका खून खोलने लगा था। वे भारत की षक्ल–सूरत बदल देना चाहते थे। कौन जानता था कि भारत को भारत ही रहना था।"[6] एक दिन जब राजु परमार रात के समय घर वापस जा हीं रहा था कि उसने एक लडकी की आवाज सुनी। वो लडकी बहुत



SHIVAJI COLLEGE HINGOLI
PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

MAH MUL/03051/2012 ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Publication | April To June 2019 Issue-30, Vol-07 | 099

मुष्किल में थी और मद्द के लिए किसी को पुकार रहीं थी। राजू आवाज की तरफ आगे बढा तो उसने देखा कि कुछ लोग जो उसे पकडे हुए थे वो उसी समय राजू को देखकर भाग गये। वो लडकी का नाम सादिया था। वो मुसलमान थी इसलिए कुछ हिन्दु लोगों ने उसको पकड लिया था। वो अपने पिता के साथ रहती थी। राजू ने सादिया को धीरज बंधाते हुए फिर सही सलामत उसे उसके घर तक छोड आया था। दूसरे दिन जब राजू कॉलेज में आया तो उसने देखा कि सादिया उसीके क्लासरूम में पढती थी। एक–दूसरे से अब परिचय होने के बाद सादिया ने राजू का धन्यवाद भी किया था। धीरे–धीरे उन दोनों के बीच अब बांते भी होने लगी थी। राजू ने सादिया को अपने क्रांतिकारी संघ का सदस्य बना दिया था। इसी बीच उन दोनों की दोस्ती प्यार में बदल गई थी। परंतु राजू हिन्दु था और सादिया मुसलमान होने के कारण उन दोनों को क्लासरूम से लेकर बाहार तक के लोगों की बहुत सारी कडवी बातें सुनना पड रहा था। उन दोनों की दोस्ती की चर्चा अब क्रुर हिन्दुओं के बीच एक हिंसा का रूप धारण करने लगी थी। सादिया के पिताजी को जब इस बात का पता चला तो उनको भी राज के हिन्दु होने की बात खटकने लगी थी। वह अपनी बेटी से कहते है '' बेटा यह हिन्दुस्थान है। यहाँ जातियाँ और धर्म पहले है और आदमी बाद में।''[७]

दूसरी तरफ कई हिन्दु कार्यकर्ता व्दारा राजू को भी सादिया से दूर रहने की चेतावनी मिल चुकी थी। राजू बहुत ही नीडर और स्वाभिमानी लडका था, वो किसी से डरनेवाला नही था। राजू जितना सादिया और दलित संघ से जुडने लगा था उतना ही पुलिसकर्मी लोग उसके दुष्मन होते जा रहें थे। एक दिन राजू को इसी दंगे का फायदा उठाकर होस्टेल से निकाल दिया गया। उसका कसूर बस इतना था कि वो दलित क्रांतिकारी संघ में काम करता था और सादिया से प्यार करता था । राजू को होस्टेल से निकाल दिया गया तो असलम के साथ–साथ बाकी कार्यकर्ता भी उसकी मदद के लिए आ गए परंतू राजू इतना स्वाभिमानी था कि वो एक तबेले में जाकर रहने लगा मगर उसने किसी की मदद तक नही ली। राजू के साथ–साथ सादिया को भी क्लासरूम के कुछ विद्यार्थी की हैरान गति के कारण उसने भी कॉलेज जाना छोड दिया था। राजू परमार और सादिया अब कभी–कभी तबेले पर ही मिलते थे। दंगो के समय में अगर सादिया दलित महासंघ में नहीं जा पाती तो राजू खुद उसकी खबर लेने उसके घर तक पहुँच जाता था। दोनों में प्यार कम नहीं हो रहा था। दोनो एक दुसरे को अच्छी तरह प्यार करने लगे थे।

इसी बीच दंगे का इतना भयंकर रूप फैल गया कि जितने भी हिन्दु कार्यकर्ता थे वो मुसलमानों के घर जाकर उन्हे मारने–पीटने लगे। यह भीड सादिया के घर तक जा पहुंची। इस भीड ने सादिया के पिताजी की हत्या कर दी। सादिया इन सब के बीच से बडी मुष्किल से अपने पडोसी की मदद से अपनी जान बचाकर निकल गई। लोगों ने बडी बेहरहमी से सादिया के पिताजी को मार डाला था। सादिया बहुत दुःखी थी वह वहांसे किसी तरह भागने में कामीयाब हुई। अपने पिता के मश्त्यु की खबर उसे मिली तो वह बहुत दुःखी हुई। सादिया के पिता भीड का शिकार हो गए। न जाने ऐसे कितने लोग होंगे जो भिड का शिकार हुए है। उपन्यास के माध्यम से हिन्दु और मुस्लिम, हिन्दु और दलित के बीच उभरनेवाले दंगों का चित्रन प्रस्तुत किया गया है।

'जखम हमारे' उपन्यास में लेखक मोहनादास नैमिषराय ने हिन्दु–मुसलमान के बीच के साम्प्रदायिकता को लेकर हो रहीं समस्या के साथ–साथ समाज के उपेक्षित वर्ग को लेकर दलित के साथ हो रहे अन्याय को भी दर्षाया है। लेखक प्रस्तुत उपन्यास में भूकम्प जैसी दर्दमय स्थिति को प्रस्तुत किया है, उसमें भी दलित पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया गया है। भूकम्प जैसी स्थिति में भी अपना सब कुछ खो जाने के बाद भी लोगो के मन में ऊंच–नीच जैसी भावना जाग्रत ही रहती है। समाज का नीचला वर्ग जो दलित से जाना जाता है वो चाहे जितना उपर उठ जाए मगर समाज के कुछ सवर्ण लोग उसे कभी उपर उठने नहीं देते है, आखिर में दलित को दलित ही बना रहना पडता है। भूकम्प जैसी परिस्थितियों में भी लोग अपने धर्म और जात–पात को दूर नहीं करते। T.C.



SHIVAJI COLLEGE HINGOLI
PRINCIPAL ... COLLEGE ... Hingoli
Assistant Professor ... College, Hingoli. ... Hingoli.(MS.)